औरंगजेब की दक्कन नीति की आर्थिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

डॉ. संजीव कुमार गौतम (प्रवक्ता, इतिहास)
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान
(मानद विश्वविद्यालय) चोगलमसर, **लेह**
लद्दाख (केन्द्र शासित प्रदेश)–194104
Email:skgautamcibs@gmail.com

सारांश

सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति का निर्धारण उसके चाहने अथवा न चाहने पर निर्भर न होकर उस समय की बदली हुई परिस्थितियों में बढ़ते हुये साम्राज्य खर्च के लिए अधिक से अधिक राजस्व क्षेत्रों की निरन्तर आवश्यकता बनी रहना, पर निर्भर थी। सम्राट औरंगजेब ने अपनी इस दक्कन नीति के द्वारा पूरे भारतीय प्रायद्वीप में एक छत्र मुगल साम्राज्य स्थापित करके जहाँ विश्व के विशालतम साम्राज्यों में मुगल साम्राज्य को स्थान दिलवाकर अपने पर दादा अकबर महान द्वारा प्रारम्भ की विस्तारवादी नीति को चर्मोत्कर्ष पर पहुंचाया। मुगल कालीन प्रसिद्ध इतिहासकार **अबुल फज़ल** का कथन *यदि हम पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण नहीं करेंगे, तो वह अपने आक्रमण हम पर करते रहेंगे।* से सम्राट औरंगजेब की साम्राज्यवादी नीति को और बल मिल जाता है ऐसी स्थिति में सम्राट औरंगजेब मुगल साम्राज्य विरोधी त्रिगुट शक्तियों (मराठा, बीजापुर तथा गोलकुण्डा) को नष्ट करने के लिये दक्कन नीति के तहत सैन्य अभियान की शुरुआत नहीं करता, तो सम्भवतः मुगल साम्राज्य का पतन उसके शासन काल के दौरान ही प्रारम्भ हो जाता। मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक संरचना को देखते हुये मुगल उमरा (मनसबदारों) को समायोजित करना अपरिहार्य हो गया था। इनका समायोजन नये क्षेत्रों के जीते बिना सम्भव ही नहीं था। यद्यपि इस दक्कन नीति से मनसबदारों को पूर्णतः समायोजित नहीं किया जा सका, जो सम्राट औरंगजेब दक्षिण नीति का सबसे कमजोर पहलू था। सम्राट औरंगजेब अपनी तथाकथिक दक्कन नीति के माध्यम से मुगल साम्राज्य के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध हो रही दक्कन भारत की त्रिगुट शक्तियों (मराठा, बीजापुर तथा गोलकुण्डा) को नष्ट करने में काफी हद तक सफल रहा। उसकी इस नीति से पूरे भारत में एक ही प्रकार की मुद्रा का चलन सम्भव हो पाया तथा इसके माध्यम से पूरे देश में राजनैतिक एकता व अखिल भारतीय प्रशासनिक ढाँचा स्थापित करने की सफल कोशिश की गयी।

,,,,,,,,,,

औरंगजेब की दक्कन नीति की आर्थिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

डॉ. संजीव कुमार गौतम (प्रवक्ता, इतिहास)
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान
(मानद विश्वविद्यालय) चोगलमसर, **लेह**
लद्दाख (केन्द्र शासित प्रदेश)–194104
Email:skgautamcibs@gmail.com

प्रस्तावना

मुगल सम्राटों की नीतियों में औरंगजेब की दक्कन (दक्षिण) नीति सर्वाधिक विवादास्पद है। सम्राट औरंगजेब की यह दक्कन नीति समय व परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुई थी, जिसके अनेक जटिल कारक जैसे–साम्राज्य की प्रशासनिक संरचना, कुलीन वर्ग की मुगल प्रशासन में स्थिति, मुगल साम्राज्य को आन्तरिक विद्रोह से सुरक्षा प्रदान करने, एक मजबूत केन्द्रीय सेना को बनाये रखना, जमा और हासिल आय में बढ़ते विषम अनुपात थे। इन सबसे पूर्णरूप से निजात पाने के लिए दीर्घकालीन और अल्पकालीन दोनों ही दृष्टियों से आर्थिक संसाधनों की निरन्तर खोज करते रहना[1] तथा महत्वाकांक्षी मुगल उमरा के सम्भावित विद्रोहों को टालना अति आवश्यक था।

कारण, लक्ष्य तथा उद्देश्यः

इस शोध पत्र के माध्यम से औरंगजेब की दक्कन नीति के कार्य–कारक तथा सम्बन्ध का सूक्ष्मता से विश्लेषण करने पर इस तथ्य पर पहुंचते है कि उसके पूर्ववर्ती मुगल सम्राटों ने दक्कन में विस्तारवादी नीति को जिन कारकों की वजह से लागू किया था, सम्राट औरंगजेब के समय यही जटिल कारक इतने गंभीर रूप में सामने आ चुके थे कि उसके लिए दक्षिण में विस्तारवादी नीति[2] का त्याग चाहकर भी सम्भव न था और अपने इस साम्राज्य को बचाये रखने के लिये दक्कन नीति उसकी मजबूरी बन चुकी थी, साथ–ही–साथ सम्राट औरंगजेब के शासन काल में प्रथम बार कुछ ऐसे कारक सामने आते हैं, जो उसके पूर्ववर्ती मुगल सम्राटों के शासन के दौरान प्राय नजर नहीं आते। ये कारक थे–1.दक्षिण में मुगल साम्राज्य की धुर विरोधी और हिन्दू शामन्त शाही शासन की पोषक मराठा शक्ति का उत्कर्ष चरम पर होना।[3] 2.दक्षिण के शेष बचे बाजीपुर, गोलकुण्डा राज्य अपना अलग अस्तित्व मजबूती के साथ बनाये हुए थे, जो अपने आर्थिक हितों को सर्वोपर मानते हुये, मुगल शासन को कभी राजस्व जमा करना कर देते थे, तो कभी उचित अवसर पाकर साम्राज्य के साथ हुई संधियों का खुल्लम–खुल्ला उल्लंघन करके स्वतन्त्र विचरण करने लगते थे। 3.मुगल शासन में जमा आय

व हासिल आय में विषम अनुपात 52:100 था, जबकि उत्तर भारत में यह विषम अनुपात 67:100 था।[4] जिससे कारण साम्राज्य का प्रशासनिक तन्त्र सीधे प्रभावित हुआ। 4.मुगल इतिहास में प्रथम बार सबसे भयानक उत्तराधिकार का युद्ध (1657–1658ई.) में हुआ,[5] जिसमें औरंगजेब की विजय के साथ ही दारा शिकोह, मुहम्मद शुजा और मुराद के समर्थक मनसबदार सम्राट औरंगजेब की तरफ आ मिले थे और उन्हें सन्तुष्ट रखने के लिए पहले से ज्यादा मनसब देना जरूरी था।[6] उपरोक्त कारणों की वजह से औरंगजेब दक्षिण राज्यों की जीतकर साम्राज्य के लिए नये राजस्व क्षेत्र पाकर, आर्थिक तन्त्र ओर अधिक मजबूत करके साम्राज्य खर्च के लिए राजस्व की कमी जैसी समस्या का हमेशा के लिए अन्त करना चाहता था।[7]

जहाँ तक दक्कन भारत के बीजापुर, गोलकुण्डा राज्यों का मुगल साम्राज्य में पूर्ण विलय का प्रश्न हैं, तो यह औरंगजेब के पिता शाहजहाँ के दिमाग की निजी सोच थी न कि स्वयं औरंगजेब की सोच,[8] जैसा कि 1656ई. के दौरान सम्राट शाहजहाँ द्वारा औरंगजेब को दिया गया फरमान से विदित होता है।

सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीतिः

सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति को दो भागों में बाँट सकते है 1.प्रथम भाग 1658–59 से 1680ई. तक दक्कन राज्यों के साथ संबंध। 2.द्वितीय भाग 1681–82 से 1707ई. दक्कन भारत के राज्यों से संबंध।

प्रथम भाग(1658–59 से 1680ई.)– जून, 1659ई. को विधिवत् राज्यभिषेक कराने के बाद सम्राट औरंगजेब ने अपने मामा शायस्ता खाँ को दक्कन भारत का प्रथम सूबेदार के रूप में नियुक्ति प्रदान करते हुए यहाँ राज्यों की ओर ध्यान दिया क्योंकि 1656–57ई. के दौरान लड़े गये युद्धों ने किसी भी पक्ष का भला नहीं किया था।[9] 1656–57ई. के दौरान जहाँ सम्राट औरंगजेब ने इन राज्यों के पूर्ण विलय का समर्थन करके शाहजहाँ की नीति का समर्थन किया था लेकिन इसी बीच में हुए राजीनामा(समझौता) से सम्राट औरंगजेब की मेहनत बेकार रही। दूसरी तरफ दक्कन भारत के राज्य भी संत्रस्त व विमुख थे। बीजापुर व गोलकुण्डा राज्यों के मुगल साम्राज्य में विलय के लिए मुख्य वाधक मराठा शक्ति थी क्योंकि ऐसा होने की स्थिति में मराठों सरदारों को इन राज्यों से प्रदान की गयीं वतन जागीरें छिन जाने का भय सता रहा था।

दक्कन भारत पहुंचते ही शायस्ता खाँ ने मराठा शक्ति को नष्ट करने के उद्देश्य से 1661–62ई. के दौरान शिवाजी के अधिकार वाले पूना, चाकन, कल्यान आदि क्षेत्रों को जीत लिया परन्तु 15अप्रैल,1663 में शिवाजी द्वारा अचानक किये गये घातक हमले (आक्रमण) के कारण सम्राट औरंगजेब शायस्ता खाँ को हटा दिया[10] और अपने ताकतवर सेनापति मिर्जा जयसिंह को 1665ई. में दक्कन भारत का सूबेदार बनाया। मिर्जा जयसिंह ने बीजापुर से 1657ई. में हुई संधि की शर्तों की भरपाई करने के उद्देश्य से 22जून,1665 को शिवाजी से अनाकृमण संधि करके,[11] बीजापुर पर नवम्बर,1665 में आक्रमण कर दिया लेकिन मिर्जा जयसिंह को इस छापा मार युद्ध नीति में हार का मुंह देखना पड़ा और दिल्ली लौटते समय बुरहानपुर में उसकी मृत्यु हो गयी। मिर्जा जयसिंह के बाद दिलेर खाँ दक्कन भारत का सूबेदार बनाया गया, इस समय बीजापुर में सिकन्दर आदिल शाह सुल्तान था और यह बीजापुर के युवराज का संरक्षक भी था। बीजापुर में अनिर्णय की स्थिति 1685ई. तक बनी रही।

गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिलाने का मुख्य कारण कर्नाटक में मीर जुमला की जागीर पर गोलकुण्डा अपना अधिकार मानना था, जबकि औरंगजेब यहाँ के कोरोमण्डल के सम्पन्न व उपजाऊ प्रदेश को मुगल साम्राज्य के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता था।[12] अन्य कारण 1665–66ई. में अब्दुल्ला कुतुब शाह द्वारा शिवाजी की सहायता करना था और इसी नीति को 1677ई. में पुनः अब्दुल्ला कुतुब शाह के पुत्र व सुल्तान अबुल हसन द्वारा दोहराया जाना था।

सम्राट औरंगजेब के लिए मराठा शक्ति जिसका पोषण बीजापुर, गोलकुण्डा राज्यों के अनुग्रह से हुआ था। यही ऐसी प्रमुख समस्या थी, जिसका वह जल्दी से जल्दी विनाश करना चाहता था। अतः उसने शायस्ता खॉ की असफलता के बाद अपने सर्वाधिक शक्तिशाली सेनापति मिर्जा जयसिंह व शाहजादा मुअज्जम को 1665ई. में दक्कन भारत का सूबेदार बनाकर भेजा। दक्कन भारत पहुंचते हुए मिर्जा जयसिंह ने शिवाजी को बिना शर्त समर्पण के लिए बाध्य करते हुए 22जून,1665 में संधि के लिए विवश कर दिया तथा संधि की शर्ते मुगल साम्राज्य के हित में मनवाते हुए सम्राट औरंगजेब से मिलने के लिए शिवाजी को राजी किया। शिवाजी ने 9 मई, 1666 ई. में प्रथम बार सम्राट औरंगजेब से आगरा में भेंट तो की लेकिन कोई विशेष सम्मान न पा सका[13] और विरोध स्वरूप जयपुर हाऊस में बंद होना पडा, परन्तु शीघ्र ही जेल से निकलकर 1666ई. में शिवाजी रायपुर पहुंचने में सफल रहा। वहाँ से यह महाराष्ट्र पहुंच गया तथा लगभग 07वर्ष तक अपनी आर्थिक तथा राजनैतिक मजबूत स्थिति सही करता रहा,[14] शिवाजी ने 25जून,1674 में राज्याभिषेक कराया। अपने इस राज्याभिषेक की महत्ता

दिखाने के लिए शिवाजी ने वैदिक मंत्रों के साथ बनारस के पण्डित श्री गंगा भट्ट से राज्याभिषेक कराया था।[15]

अपने जीवन अन्तिम समय में शिवाजी ने गोलकुण्डा के सुल्तान अबुल हसन अब्दुल्ला खॉ की सहायता से कर्नाटक का कुछ क्षेत्र पा लिया और जिंजी को राजधानी बनाया। मुगल साम्राज्य से निरन्तर संघर्ष में थककर शिवाजी ने 14अप्रैल,1680 ई. में अन्तिम सांस ली।

द्वितीय भाग.1681–82 से 1707ई.–सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति का द्वितीय भाग का प्रारम्भ 1681–82ई. में स्वयं दक्कन भारत पहुंचकर दक्षिण राज्यों के साथ नीति निर्धारण का पूरा उत्तरदायित्व खुद अपने हाथ में लेने के साथ शुरू होता है।[16] सम्राट औरंगजेब के दक्कन भारत आने के दीर्घकालिक व तत्कालिक दोनों ही कारक मौजूद थे– 20वर्ष से मुगल साम्राज्य को भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ रही थी और अभियान–दर–अभियान असफल हो रहे थे, साथ ही साथ दक्कन भारत के राज्यों के सुल्तान व मराठा जब चाहते तब वह मुगल शासन के साथ हुयी पूर्व संधि का खुला उल्लंघन करके मुगल साम्राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों को लूटकर अशांति क्षेत्र बना देते थे,[17] इस कारण मुगल साम्राज्य में सैनिक टुकड़ियां रखने के लिए मनसबदारों को दक्कन भारत में जागीरे देने की सख्त जरूरत थी। जैसाकि **एफ. बर्नियर** स्वयं कहता है **"दक्कन हिन्दुस्तान के सैनिकों की खुराक था।"** और यह वही समय था जब दक्कन में शम्भाजी मराठा राजा व शिवाजी का पुत्र ने मुगल सम्राट औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर द्वितीय को मुगल सम्राट घोषित कर दिया था।

सम्राट औरंगजेब ने बीजापुर, गोलकुण्डा व मराठा शक्ति के त्रिगुट को नष्ट करने के उद्देश्य से सर्व प्रथम मार्च,1685 में बीजापुर पर मुहम्मद आजम के नेतृत्व में शाही सेना भेजी और 13जुलाई,1686 में सम्राट औरंगजेब ने खुद नेतृत्व संभालकर 22सितम्बर,1686 को सिकन्दर आदिल शाह को समर्पण के लिये बाध्य किया[18] इस प्रकार बीजापुर का मुगल साम्राज्य में पूर्ण विलेय कर सुल्तान आदिल शाह की पैंशन 1,00,000 रूपये वार्षिक तय की थी।

बीजापुर के मुगल साम्राज्य पूर्ण विलय के बाद सम्राट औरंगजेब आदेश से शाही सेना ने गोलकुण्डा पर 07फरवरी,1687 में आक्रमण कर दिया और लगभग 9महीने बाद 02अक्टूबर,1687 गोलकुण्डा पर पूर्णरूप से अधिकार करके उसकी स्वतंत्र सत्ता का अस्तित्व समाप्त कर दिया तथा यहाँ के सुल्तान अबुल हसन कुतुब शाह को 50,000 रूपये वार्षिक पैशन देकर दौलताबाद किले में बंद कर दिया।[19]

इन दोनों राज्यों के मुगल साम्राज्य में पूर्ण विलय से दक्कन भारत राज्यों का क्षेत्रफल 95,998 वर्गमील से बढ़कर 3,46,459 वर्गमील तक जा पहुंचा। और यह क्षेत्रफल कुल मुगल साम्राज्य का 27.7 प्रतिशत था।[20]

बीजापुर, गोलकुण्डा राज्यों के पूर्ण विलय के बाद अब सम्राट औरंगजेब का मराठा शक्ति का दफन करना प्रथम व अन्तिम लक्ष्य शेष रह गया था। इसे पूरा करने के लिए फरवरी, 1689 में पूरी ताकत से आक्रमण करवा दिया तथा शीघ्र ही मुगल सेनापति मुकर्रब खॉ ने कवि कलश व मराठा राजा शम्भाजी को पकड़ लिया तथा फिर मराठा राजा 21मार्च, 1689 को निमर्मता पूर्ण हत्या कर दी गयी। शम्भाजी की मृत्यु के बाद राजाराम व ताराबाई ने मुगल साम्राज्य के विरूद्ध संघर्ष तो जारी रखा, लेकिन कोई विशेष सफलता हासिल नहीं कर सके। वही सम्राट औरंगजेब भी अपने शासन काल के दौरान दक्षिण में अपने साम्राज्य को मजबूती प्रदान करने में लगा रहा, परन्तु मराठा शक्ति का पूर्णतः दफन नहीं किया जा सका। सम्राट औरंगजेब ने अपने शासन काल के अन्तिम समय तक परिस्थितियों व जटिल कारकों को अपने साम्राज्य के पक्ष में मोडने की भरकस कोशिश अवश्य की और इसी कोशिश में 2मार्च,1707 में अन्तिम सांस लेने के साथ ही सम्राट औरंगजेब दक्कन नीति का अध्याय हमेशा–हमेशा के लिए बंद हो गया।

परिणामः

सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति के दौरान दक्कन भारत के राज्यों में 1,000 जात या इससे ज्यादा जात वाले मनसबदारों की संख्या इन मनसबदारों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई। यह वृद्धि 1658–59 से 78ई. में मौजूद 58 मनसबदारों की तुलना में 1678–79 से 1707ई. तक 160 तक जा पहुंची थी।[21] जिसके कारण इन मनसबदारों को समायोजित करने के लिए नयी जागीरों की जरूरत निरन्तर बढ़ती ही गयी, इसी के परिणाम स्वरूप मुगल साम्राज्य जागीरों का आकार दिनों–दिन छोटा होने लगा और कुछ जागीरें तो मात्र शाही दस्तावेजों तक ही सीमित रह गयी।[22] दूसरी और जमा और हासिल आय का अनुपात 100:52 होने के कारण दक्कन भारत के राज्यों में हासिल 1667 से 1707ई. के दौरान 3,17,00,19,814.32 दाम/ वर्ष थी[23] और दक्कन राज्यों के मनसबदारों की संख्या में निरन्तर वृद्धि के कारण सवारों पर खर्च 3,49,56,00,000 दाम/वर्ष था।[24] इस प्रकार सवारों पर खर्च दक्कन भारत के राज्यों की वास्तविक आय से 32,55,80,105.32 दाम या 8,13,95,036.32 रूपये/वर्ष ज्यादा था और यह औरंगजेब की दक्षिण नीति का सबसे कमजोर पक्ष था,[25] जिससे साम्राज्य की आर्थिक समस्या

का पूर्णतः समाधान नहीं किया जा सका। जिससे कारण लगभग 02 शताब्दी से सुचारू रूप से चला आ रहा मुगल साम्राज्य का प्रशासनिक तन्त्र सीधे प्रभावित हुआ। जिसके परिणामस्वरूप मुगल प्रशासन आधारभूत ढाँचा मनसब व्यवस्था का व्यवस्थित क्रम डगमगाने लगा।

सम्राट औरंगजेब की तथाकथित दक्कन नीति के भारत में कुछ अच्छे परिणाम भी सामने आये– मुर्शीद कुली खॉ और सम्राट औरंगजेब द्वारा सम्राट शाहजहाँ के समय दक्कन भारत में किये गये कृषि सुधारों को बाद में ब्रिटिश सरकार ने भी लागू उसी रूप (भूमि का उपजाऊपन के आधार पर वर्गीकरण करके लगान तय करना) में लागू किये थे।[26] इससे ब्रिटिश काल के भारत में रैय्यतवारी प्रथा लागू करने वाले ***टामस मुनरो*** काफी प्रभावित हुआ।[27] उत्तरी भारत के चांदी के सिक्कों का चलन दक्कन भारत के राज्यों में और तेज हुआ, जिससे दक्षिण में चांदी के सिक्कों की टकशालें सर्वाधिक 24 हो गयी,[28] इससे पूरे भारत में एक ही प्रकार की मुद्रा के प्रचलन से लोगों का राजनैतिक एकता में विश्वास बढ़ा। अब उत्तर भारत के लोगों को सुदूरवर्ती दक्कन भारत पहुंचने पर अपने सिक्कों को नहीं बदलना पड़ता था साथ ही साथ दक्कन भारत में प्रचलित सोने के सिक्के उत्तर हिन्दुस्तान में आने से मुद्रा स्फीति रोकने में सहायक सिद्ध हुये,[29] क्योंकि सम्राट शाहजहाँ के शासन काल में जमा और हासिल का अनुपात 100:25 प्रतिशत था। वही सम्राट औरंगजेब के शासन काल में यह अनुपात 100:67 प्रतिशत हो गया था।[30] यह सब दक्कन भारत राज्यों से निरन्तर बढ़ती हुई हासिल से ही सम्भव हो सका था। सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति का एक विशेष उल्लेखनीय पक्ष यह रहा कि उसने नेतृत्व में दक्कन भारत में लागू की गयी कृषि सम्बन्धी नीतियों को ब्रिटिश सरकार ने भी पूर्वत बनाये रखा था।

वस्तुतः सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति का निर्धारण उसके चाहने अथवा न चाहने पर निर्भर न होकर उस समय की बदली हुई परिस्थितियों में बढ़ते हुये साम्राज्य खर्च के लिए अधिक से अधिक राजस्व क्षेत्रों की निरन्तर आवश्यकता बनी रहना, पर निर्भर थी। सम्राट औरंगजेब ने अपनी इस दक्कन नीति के द्वारा पूरे भारतीय प्रायद्वीप में एक छत्र मुगल साम्राज्य स्थापित करके जहाँ विश्व के विशालतम साम्राज्यों में मुगल साम्राज्य को स्थान दिलवाकर अपने पर दादा अकबर महान द्वारा प्रारम्भ की विस्तारवादी नीति को चर्मोत्कर्ष पर पहुंचाया। मुगल कालीन प्रसिद्ध इतिहासकार **अबुल फज़ल** का कथन यदि हम पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण नहीं करेंगे, तो वह अपने आक्रमण हम पर करते रहेंगे।[31] से सम्राट औरंगजेब की साम्राज्यवादी नीति को और बल मिल जाता है ऐसी स्थिति में सम्राट औरंगजेब मुगल साम्राज्य विरोधी त्रिगुट शक्तियों (मराठा, बीजापुर तथा गोलकुण्डा) को नष्ट करने के लिये दक्कन नीति के तहत सैन्य अभियान की शुरुआत नहीं करता, तो सम्भवतः मुगल साम्राज्य का पतन उसके शासन काल के दौरान ही प्रारम्भ हो जाता।

निष्कर्षः

सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति और आर्थिक दृष्टिकोण का सूक्ष्मता से विश्लेषण करने पर यह महत्वपूर्ण तथ्य उभरता है कि मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक संरचना को देखते हुये मुगल उमरा (मनसबदारों) को समायोजित करना अपरिहार्य हो गया था। इनका समायोजन नये क्षेत्रों के जीते बिना सम्भव ही नहीं था। यद्यपि इस दक्कन नीति से मनसबदारों को पूर्णतः समायोजित नहीं किया जा सका, जो सम्राट औरंगजेब दक्षिण नीति का सबसे कमजोर पहलू था। सम्राट औरंगजेब अपनी तथाकथिक दक्कन नीति के माध्यम से मुगल साम्राज्य के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध हो रही दक्कन भारत की त्रिगुट शक्तियों (मराठा, बीजापुर तथा गोलकुण्डा) को नष्ट करने में काफी हद तक सफल रहा। उसकी इस नीति से पूरे भारत में एक ही प्रकार की मुद्रा का चलन सम्भव हो पाया, इसके माध्यम से पूरे देश में राजनैतिक एकता व अखिल भारतीय प्रशासनिक ढाँचा स्थापित करने की कोशिश की गयी। यह सम्राट औरंगजेब की दक्कन नीति का ही परिणाम था कि उसके शासन काल में मुगल साम्राज्य उस समय के विश्व के विशालतम साम्राज्यों में से एक था।

,,,,,,,,,,,,

संदर्भ सूचीः

1. सिलेक्टेड डाक्यूमेंट्स ऑव औरंगजेब्स रेन, एडिटेड बाइ युसुफ हुसैन, हैदराबाद, 1958, पृष्ठ281
2. अबुल फज़लः अकबरनामा–ब्लॉचमन एण्ड फिल्लोट द्वारा अनुवादित, बिबिलियोथिका इण्डिका, कलकत्ता,1893,भाग2,पृष्ठ299
3. इरफान हबीबःएग्रेरियन सिस्टम ऑव मुगल इण्डिया(1536–1707),दिल्ली,1982, पृष्ठ409
4. एफ.बर्नियरःट्रेवल्स इन द मुगल ऐम्पायर (1656–1668),एडिटेड बाई.ए.कांस्टेबल, लन्दन,1961,पृष्ठ143
5. खॉ, मुहम्मद हाशिम खाफीः मुंतखब–उल–लुबाब एडिटेड बाई के. अहमद एण्ड हेग, बिबिलियोथिका इण्डिका, कलकत्ता, 1906, पृष्ठ 87,124
6. सक्सेना, बी.पीः हिस्ट्री ऑव शाहजहाँ ऑव देहली, इलाहाबाद,1958, पृष्ठ127–128
7. सरकार, जदुनाथः हिस्ट्री ऑव औरंगजेब्स रेन, कलकत्ता,1933, पृष्ठ118

8. सरकार, जदुनाथः शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, कलकत्ता,1938, पृष्ठ118
9. सरकार, जदुनाथः हिस्ट्री ऑव औरंगजेब्स रेन, कलकत्ता,1933, पृष्ठ21, 22
10. मोरलैण्ड, डब्ल्यू.एचः फ्रॉम अकबर टू औरंगजेब : अ स्टडी ऑव इकनॉमिक हिस्ट्री, बिबिलियोथिका इण्डिका, कलकत्ता,1938, पृष्ठ148
11. सरदेसाई, जी.एसः न्यू हिस्ट्री ऑव मराठास् पीपुल, पूना,1958, वाल्यूम III, पृष्ठ107
12. इरफान हबीबः मध्यकालीन भारत, भाग 3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ80
13. वही,पृष्ठ107
14. सरकार, जदुनाथः हिस्ट्री ऑव औरंगजेब्स रेन, कलकत्ता,1919, पृष्ठ61
15. एफ.बर्नियरः ट्रेवल्स इन द मुगल ऐम्पायर(1656–1668), एडिटेड बाई ए.कॉंस्टेबल, लन्दन,1916,पृष्ठ13
16. सरकार, जदुनाथः शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, IV एडिसन, कलकत्ता,1948, पृष्ठ106
17. इरफान हबीबः मध्यकालीन भारत, भाग 3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1993, पृष्ठ110
18. अली, मुहम्मद अतहरः मुगल नोबलिटी अण्डर औरंगजेब, बोम्बे,1969, पृष्ठ208
19. चन्द्र, सतीशः पार्टीस एण्ड पोलिटिक्स एट द मुगल कोर्ट(1707–1740),दिल्ली,1989, पृष्ठ47, 219
20. 6,961,104×52 / 100=3,17,00,19,81,4.32 दाम / वर्ष
21. दक्कन(दक्षिण) राज्यों के मनसबदारों का खर्च
22. मोरलैण्ड,डब्ल्यू.एचः इण्डिया एट द देथ ऑव अकबर, लन्दन,1929,पृष्ठ104
23. खॉ,मुहम्मद हाशिम खाफीः मुंतखब–उल–लुबाब : एडिटेड बाइ के.अहमद एण्ड हेग, बिबिलियोथिका इण्डिका, कलकत्ता1860, पृष्ठ73
24. एफ.बुसाननः अ जर्नी फ्रॉम मद्रास थ्रो द कंट्रीस् मैसूर, कैनारा एण्ड, मालावार, लन्दन, 1809,पृष्ठ112–113, 187–188
25. दत्ता,आर.पीः द इक्नॉमिक हिस्ट्री ऑव इण्डिया अण्डर द अर्ली ब्रिटिश रुल, लन्दन, 1909,पृष्ठ147
26. द कॉइनस् ऑव द मुगल एम्परर्स ऑव हिन्दुस्तान, ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन,1882

27. इरफान हबीबः एग्रेरियन सिस्टम ऑव मुगल इण्डिया(1556–1707),देहली,1982, पृष्ठ392–393
28. इरफान हबीः मध्यकालीन भारत, भाग 3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1982, पृष्ठ109
29. दत्ता.आर.पी.ः द इकनॉमिक हिस्ट्री ऑव इण्डिया अण्डर द अर्ली ब्रिटिश रुल, लन्दन, 1908,पृष्ठ147
30. एफ.बुसाननः अ जर्नी फ्रॉम थ्रो द कंट्रीस् ऑव मैसूर, कैनारा एण्ड मालावार, लन्दन, 1809,पृष्ठ187,188,213
31. अबुल फज़लः अकबरनामा,वाल्यूमII, ब्लाचमन एण्ड फिल्लोट द्वारा अनुवादित, बिबिलियोथिका इण्डिका, कलकत्ता,1893,पृष्ठ299